* लोक कलाएं *

* वह कलाएं जो अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुरूप बनायी जाती है 'लोक कलाएं' कहलाती है।

1. भित्ति चित्रण →
दीवारो पर चित्रों का चित्रण "भित्ती चित्रण" कहलाता है।

* यह मूलतः इटली की कला है जो अकबर के समय भारत (दिल्ली व लाहौर) लाई गई।
* भित्ति चित्रण में रोहिला चुना सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।
* भित्ति चित्रों का चित्रकार 'चेजरा' कहलाता है जो सामान्यतः कुमार जाति का होता है व 'भवन निर्माण का कार्य भी करता है।
* राजस्थान में भित्ति चित्रण का प्रथम उदाहरण – जोगीदास की छतरी (उदयपुरवाटी झुंझुनु) को माना जाता है। जिसका चित्रकार – देवा था।
* भित्ति चित्रण व पशु-पक्षी चित्रण में प्रसिद्धि प्राप्त करनेवाला प्रथम चित्रकार – देवकीनन्दन शर्मा (अलवर) को माना जाता है। इसलिए इन्हें "मास्टर ऑफ नेचर एंड लिविंग ऑब्जेक्ट" के नाम से जाना जाता है।
* भित्ति चित्रण के 2 तरीके है –
  - फ्रेस्को बुनो (गिली दिवार पर चित्रण)
  - शैखो बुनो (सुखी दीवार पर चित्रण)
* भित्ति चित्रण के अन्य नाम →

राजस्थान के प्रसिद्ध काष्ठशिल्पी - सत्यनारायण लालावत - 2016 शिल्पगुरु पुरस्कार

तोरणपाल स-खाड़ा - लकड़ी की तलवार (गुलाबी रंग का)
शेखावाटी - मंलड़की वाले लड़कों का भेजते हैं

अंग्रेजी	-	फ्रेस्को पेंटिंग
हिन्दी	-	भित्ती चित्रण
राजस्थानी	-	आराइश / आला-गिला
बूंदी	-	अरोईशीया
शेखावाटी	-	पणा

जोधपुर - मार्शल टाइप शैली
जयपुर - विक्टोरिया शैली
बीकानेर - मथेरण कला

[प्रसिद्ध रियासतें - कोटा, बूंदी
प्रसिद्ध क्षेत्र - शेखावाटी]

* राजस्थान का सर्वाधिक भित्ती चित्रण - शेखावाटी
* भित्ती चित्रण के लिए प्रसिद्ध रियासतें - बूंदी, कोटा

* शेखावाटी का भित्ती चित्रण →

* मुख्य केन्द्र → नवलगढ़, चिड़ावा, रामगढ़, सरदारशहर, सुजानगढ़, मंडावा

* मुख्य कलाकार → तनसुख, जयदेव, बालुराम

* मुख्य विशेषताएं → लोक जीवन का चित्रण
  - बलखाती बालों की लटों का चित्रण

* शेखावाटी में भित्ती चित्रों के लिए 'ओपन आर्ट गैलरी' की स्थापना की है।

* बूंदी का भित्ती चित्रण →

* मुख्य कलाकार → अहमद अली, किशन, रामलाल, साधुराम, सुरजन

* मुख्य विशेषता → पशु-पक्षियों का भित्ती चित्रण

* चित्रशाला बूंदी - उम्मेदसिंह द्वारा
* रंगमहल बूंदी - छत्रसाल / शत्रुशाल द्वारा

* कोटा की भित्ती चित्रण →

* मुख्य कलाकार → गोविंदराम, लच्छीराम, नूरमोहम्मद, रघुनाथ, डालूराम

* मुख्य विशेषता → शिकार के दृश्यों का चित्रण
- नारी शिकार का चित्रण

* कोटा में झाला जी की हवेली व देवताजी की हवेली अपनी 'भित्ती चित्रो' के लिए प्रसिद्ध है।

* झाला जी के हवेली के भित्ति चित्रो के विषय में
* कार्ल खंडेलवाल ने लिखा कि "यहां के चित्रो के रंगीया में [illegible] सानी नहिं है।"

* भित्ति चित्रण के प्रकार →

1. अकारद / शैल चित्रण
2. पणुवारि
3. देवरे
4. भराड़ी
5. आखोनुखो गुणा
6. सांझुरंग
7. थापे
8. मर्चेरण
9. मांडणा

1. अकारद / शैल चित्रण → गुफाओ की दिवारो पर / चट्टानों पर चित्रो का चित्रण 'अकारद' कहलाता है →
* मुख्य केन्द्र → दर (भरतपुर), दरा व आलनिया (कोटा), बिजोलिया (भीलवाड़ा), गरदड़ा (बूंदी)

बिखली – मनोरथ्यामा दुर्ग में मंदिर
चेचक की देवी – शीतला माता

* राजस्थान में प्रथम बार शैल चित्रों की खोज हाड़ौती से विष्णुधर वाकणकर ने इसलिए उन्हे 1953 में पद्मश्री पुरस्कार दिया गया।
* आलनिया से प्रथम बार शैल चित्रों की खोज 14 अगस्त 1914 को जगतनारायण श्रीवास्तव ने की।
* शैल चित्रों पर प्रथम बार शोध (पी.एच.डी.) की उपाधि 1994 में कोटा विश्वविद्यालय से मोहनलाल साहु ने प्राप्त की।
* गरदड़ा (बूंदी) से एक 'बर्ड राईडर पेंटिंग' प्राप्त हुई है।

2. पथवारी → यह तीर्थयात्रा की देवी है जो कुमार्ग पर चलने वाले को सद्बुद्धि प्रदान करती है। तीर्थयात्रा प्रारम्भ करने से पहले दीवारो पर इस देवी का चित्रण होता है।

3. देवरे → ग्रामीण क्षेत्रों मे सड़क के किनारे मुख्यमार्ग पर किसी वृक्ष के नीचे चबूतरो की दीवारो के सहारे त्रिभुजाकार देव प्रतिमाएं स्थापित करना।

4. भराड़ी → आदिवासी भीलों में पुत्री के विवाह पर दीवारो पर किया गया लोकदेवी (बिखली) का चित्रण है।

5. आखो नुखो गुणा → ग्रामीण क्षेत्रों में चेचक / चिकनपोक्स (माताजी) निकलने पर गोबर से दीवारों पर किया गया चित्रण।

6. सांझ्या → आश्विन माह (श्राद्ध पक्ष) में कुंआरी कन्याओं द्वारा अच्छे वर की कामना के लिए पार्वती के प्रतीक के रूप में दीवारों पर बनाई गई कलाकृतियां। गोबर से

(तिब्बत में मंदिर - सुईपाद)

* प्रसिद्ध सांझारा – मछिन्दर नाथ / मत्स्येन्द्र नाथ का मंदिर (उदयपुर)

* केले की प्रसिद्ध सांझारा → श्रीनाथ जी का मंदिर (नाथद्वारा)

7. थापे → विभिन्न मांगलिक अवसरों पर हाथ की उंगलियों से दीवारों पर थप्पे देकर बनाई गई कलाकृतियां।

8. मथेरणा → दिवारों पर देवी-देवताओं के भित्ती चित्र बनाना।

9. मांडणा → विभिन्न मांगलिक अवसरों पर घर के आंगन में, मुख्य दरवाजे पर, या चौखट पर बनाये जाने वाले ज्यामितिय अलंकरण। यह अनेक प्रकार के होते हैं →

(A) चौकड़ी मांडणा → यह होली के अवसर पर बनाये जाते हैं, जिनमें 4 कोने होते हैं जो चारों दिशाओं में सुख, समृद्धि व खुशहाली को बताते हैं।

(B) लाम मांडणा → यह विवाह के अवसर पर विवाह मंडप के सामने बनाये जाते हैं जो दांपत्य जीवन में सुख, समृद्धि व खुशहाली के प्रतीक हैं।

(C) स्वास्तिक मांडणा → पुत्र जन्म के अवसर पर बनाये जाने वाले मांडणे।

(D) मोरड़ी मांडणा → मीणा जनजाति में पुत्री के विवाह पर बनाये जाने वाले मांडणे।

(E) श्रवण मांडणा → श्रावण माह में रक्षाबंधन के अवसर पर बनाये जाने वाले मांडणे।

(F) पगल्ये मांडणा → आराध्य देव के पदार्पण के लिए

टेराकोटा में चिकोटीपद्धति का प्रयोग -
कपास के बीज - बिनौले
लकड़ी की गणगौर - बीकानेर

सहरिया की बोली - खड़ी बोली
श्री महावीर जी मेला, चांदन गांव (सवाईमाधोपुर)
श्री महावीर - करौली गंभीर नदी के तट पर

(दिपावली) बनाये जाने वाले मांडणे।

2. काष्ठ कला → लकड़ी से बनाई गई विभिन्न कलाकृतियां।

* मुख्य केन्द्र - बस्सी (चित्तौड़)
* काष्ठ कला के लिए खेराद* जाति निपुण है।

(A) कठपुतली
(B) खांडा
(C) कावड़
(D) बैवाण
(E) बाजोट
(F) चपड़ा। हटड़ी
(G) तोरण

(A) कठपुतली → किसी भी व्यक्ति विशेष के पात्र को लकड़ी के ढांचे के रूप में प्रस्तुत करना 'कठपुतली' कहलाता है।

* मुख्य केन्द्र → उदयपुर**, चित्तौड़, जयपुर
* जयपुर को 'कठपुतली नगर' कहा जाता है।
* कठपुतली विकास के लिए कार्यरत संस्था 'लोककला मंडल' (उदयपुर) में है। जिसकी स्थापना 1952 देवीलाल सांभर ने की।
* कठपुतली का नाटक मंचन नट / भाट जाति के लोगों के द्वारा किया जाता है।

(B) खांडा → लकड़ी से बनाई गई तलवार नुमा आकृति। तलवारें। जो रामलीला नाटक मंचन में प्रयुक्त की जाती है।

महाराणा कुम्भा का चित्र बनाने वाला - कुंदनलाल मिस्त्री

* होली के अवसर पर कारीगरो द्वारा खांडा बांटने की परंपरा है।
* शेखावाटी क्षेत्र में विवाह के अवसर पर वधु पक्ष द्वारा वर को 'खांडा' भेजने की परंपरा है।
* 'गुलाबी रंग का खांडा 'शौर्य का प्रतीक' है। ★

(C) कावड़ → लकड़ी से निर्मित कपाट युक्त मंदिर जिसे 'चलता फिरता देवविमान' भी कहते है।

* इन किवाड़ो पर पौराणिक कथाओं का चित्रण होता है।
* कावड़िये / भाट इन किवाड़ो को खोलते हुए वाचन करते है।
* कावड़ निर्माण का मुख्य केन्द्र - बस्सी चित्तौड़
प्रसिद्ध कावड़ निर्माता - मांगीलाल मिस्त्री

(D) बेवाण → लकड़ी के सिंहासन नुमा मंदिर जिसमे ठाकुर जी की प्रतिमा स्थित होती है।

* जलझूलनी / डोल एकादशी (भाद्र शुक्ल एकादशी) के दिन किसी नदी या तालाब में स्नान करवाया जाता है।

(E) बाजोट → लकड़ी से निर्मित चौकी / खाट जो पूजा करने / भोजन बनाने के काम आती है।
* विवाह के अवसर पर दूल्हा-दुल्हन को बाजोट पर बैठने की परंपरा है।

(F) चेपड़ा → लकड़ी से निर्मित मसाला रखने के लिए बनाया गया 4/6 खानो का पात्र। जिसे पश्चिमी राजस्थान में 'हटड़ी' कहा जाता है।

(ज) तोरण → लकड़ी से निर्मित कलाकृति जो विवाह के अवसर पर वधु के मुख्य दरवाजे पर लटकायी जाती है। जिस पर मयूर का चिह्न होता है। जिसे खांडा / नीम की हरी टहनी से स्पर्श करवाया जाता है।
बस्सी / चित्तौड़

* तोरण मारना शक्ति का प्रतीक है।
* तोरण को मामादेव का प्रतीक माना जाता है।

3. गोदना → बबूल के कांटे / सुई की सहायता से अंगो पर चित्रण करना।

* इस पर कोयले का चूर्ण व खेजड़ी की पत्तियों का चूर्ण डाला जाता है जो बाद में हरे रंग में उभर जाता है।

* इसका सर्वाधिक प्रचलन – गरासिया जनजाति।

4. घोड़ा बावसी → यह मिट्टी के बने कलात्मक घोड़े है जिन्हे मनोति पूरी होने पर आराध्य देव को समर्पित कर दिया जाता है।

* इसका सर्वाधिक प्रचलन – गरासिया जनजाति

5. उपले → ग्रामीण क्षेत्रों में भोजन बनाने के लिए गोबर से बनाये गये 'कंडा', 'थेपड़ा' 'उपले' कहलाते है। सूखे उपलों को सुरक्षित रखने के लिए बनाये गये

6. बटेवड़े → सूखे उपलों को सुरक्षित रखने के लिए बनाई गई कलाकृतियाँ

7. कोठीया → ग्रामीण क्षेत्रों में अनाज भण्डारण के लिए

मिट्टी के पात्र जिसे सहरिया जनजाति के लोग 'कुसिल' कहते है।

9. सोहरिया → ग्रामीण क्षेत्रों में भोजन रखने के लिए बनाये जाने वाले मिट्टी के पात्र।

10. वील → ग्रामीण क्षेत्रों में छोटी-छोटी वस्तुओं को रखने के लिए दिवारों में बनाई गई महल नुमा आकृतियाँ।

11. मौण → पश्चिमी राजस्थान में मिट्टी से बनाये गये बड़े-बड़े मटके जिनका मुँह सकड़ा।
मुख्य केन्द्र — मेड़ता* (नागौर)

12. मोण्डे → पश्चिमी राजस्थान में लाख से बनाये बर्तन।
मुख्य केन्द्र — *बीकानेर

12. चिकोरा / चिकोटा → पश्चिमी राजस्थान में बनाये गये मिट्टी के पात्र जो मांगलिक अवसरों पर बच्चों द्वारा तेल इकट्ठा करने के लिए घर-घर घुमाया जाता है।

13. हिड़ू → पूर्वी राजस्थान में मिट्टी से बनाया गया पात्र जिसमे बिनौले (कांकड़े / कपास के बीज) डालकर दीपावली के अवसर पर घर-घर घुमाये जाते है। जो खुशहाली का प्रतीक माने जाते है।

14. पाने → कागज पर देवी-देवताओं का चित्रण करना 'पाने' कहलाते है।

*

* श्री नाथ जी पाने सर्वश्रेष्ठ माने जाते है जो 24 श्रृंगारो से परीपूर्ण होते है।

15. पिछवाई कला → श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओ का चित्रण जो सामान्यत: काले कपड़े पर किया जाता है। व कृष्ण प्रतीमा के पीछे लगाया जाता है।

मुख्य केन्द्र – श्रीनाथ जी (नाथद्वारा -राजसंमद)

16. मेहंदी महावर → विभिन्न मांगलिक अवसरो पर युवतियो व महिलाओ हाथो मे कलात्मक मेहंदी लगाना 'मेहंदी महावर' कहलाता है।

* मेहंदी सुहाग का प्रतीक है।
* कभी-कभी बुजुर्ग व छोटी बालिकाएं कलात्मक मेहंदी के स्थान पर 5 छोटे-छोटी बिंदिया बना देती है। जिसे पांचोटा कहा जाता है।

* प्रसिद्ध मेहंदी – सोजत (पाली)
* गहरे लाल सुर्ख मेहंदी – गिलुण्ड (राजसंमद)

17. फड़ चित्रण → कपड़े पर विभिन्न लोकदेवी-देवताओ की जीवन लीलाओ का चित्रण। जिसे बांस के दो डण्डो में लपेटकर रखा जाता है।

* फड़ का वाचन – भोपा-भोपे करते है।

* फड़ चित्रण में नायक को लाल व नायिका को हरे रंग से चित्रित किया जाता है।

* यदि फड़ फट जाये या पुरानी हो जाये तो उसे पुष्कर झील में विसर्जित कर दिया जाता है।

* फड़ कला का सबसे प्राचीन केन्द्र – चित्तौड़
  मुख्य केन्द्र – शाहपुरा (भीलवाड़ा)

* फड़ कला के मुख्य कलाकार → श्री लाल जोशी व पार्वती जोशी (भीलवाड़ा)

(A) देवनारायण जी की फड़ → वाचन – गुर्जर जाति के भोपो द्वारा
  वाद्य – जंतर वाद्य *

* मुख्य विशेषताएं → **
  - सबसे प्राचीन फड़
  - सबसे लम्बी फड़ (8 प्रहर का समय)
  - सबसे बड़ी फड़
  - सर्वाधिक चित्रांकन वाली फड़
  - सबसे लम्बी गाथा वाली फड़
  - सबसे छोटी फड़ →

कारण →* 2 सितम्बर 1992 को भारत सरकार के डाक विभाग ने 2×2 cm. में डाकटिकट 5 रु मूल्य का डाकटिकिट जारी किया।

(B) पाबुजी की फड़ → वाचन – नायक व आयड़ी (थोरी) जाती के भोपो द्वारा।
  वाद्य – रावण हत्था *

* विशेषता → सबसे लोकप्रिय फड़ *

Note → पाबु जी के गाथा गीत पावजी के पावड़े कहलाते है जो माठ / माठे वाद्य से गाये जाते है।

(C) रामदेव जी की फड़ → वाचन — कामड़ जाति के भोपे द्वारा
(शान्ति व भक्ति के प्रतीक) वाद्य — रावण हत्था
(इस वाद्य में भाला व इस वाद्य में तंदूरा) मुख्य चित्रकार → चौथमल चितेरा *

Note → रामदेव जी भक्तों द्वारा गाये जाने वाले गीत रामदेव जी ब्यावले कहलाते है जो तंदूरा। वाद्य द्वारा गाये जाते है।
* तंदूरा के अन्य नाम → वेणो चौतारा

(D) भैंसासुर / माताजी की फड़ → इस फड़ का वाचन नहीं होता। बल्कि चोरी करने वाली जातियाँ बावरी-बागरि व कंजर शकुन के रूप में पूजा करते है।

(E) रामदला व कृष्णदला की फड़ →
वाचन → आदिवासी जाति
*इस फड़ में किसी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं होता।